Ghaflat (Hindi)

ग़फ़लत

- सोने की ईंट
- आंखों में पिघला हुवा सीसा
- रोता हुवा दाख़िले जहन्नम होगा
- अ़क़ीक़े के 25 म-दनी फूल
- मौत के तीन क़ासिद

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी र-ज़वी

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دامت برکاتہم العالیہ

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عزوجل जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عزوجل ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (المستطرف ج۱ ص۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

(गफ़्लत)

येह रिसाला (**गफ़्लत**)

शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دامت برکاتہم العالیہ ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल या SMS) मुत्तलअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात

MO. 9374031409 E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

ग़फ़्लत [1]

ग़फ़्लत उड़ा कर येह रिसाला (24 सफ़ह़ात) मुकम्मल पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ आप अपने दिल में हलचल मह़सूस फ़रमाएंगे ।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्तर पसीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़फ़िय्यत निशान है : ऐ लोगो ! बेशक बरोज़े क़ियामत उस की दह्शतों और ह़िसाब किताब से जल्द नजात पाने वाला शख़्स वोह होगा जिस ने तुम में से मुझ पर दुन्या के अन्दर ब कसरत दुरूद शरीफ़ पढ़े होंगे । (فِردَوسُ الاخبار ج ۵ ص ۳۷۵ حدیث ۸۲۱۰)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सोने की ईंट

मन्क़ूल है : एक नेक शख़्स को कहीं से **सोने की ईंट** हाथ लग गई । वोह दौलत की **मह़ब्बत** में मस्त हो कर रात भर त़रह़ त़रह़ के मन्सूबे बांधता रहा कि अब तो मैं बहुत अच्छे अच्छे खाने खाऊंगा, बेहतरीन

---

1 : येह बयान **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के अह़मदआबाद (अल हिन्द) में होने वाले तीन रोज़ा सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ (30 रजब 1418 सि.हि./30-12-1997) में फ़रमाया था । तरमीम व इज़ाफ़े के साथ तह़रीरन ह़ाज़िरे ख़िदमत है ।

-मजलिसे मक-त-बतुल मदीना

लिबास सिलवाऊंगा और बहुत सारे खुद्दाम अपनाऊंगा। **अल ग़रज़** मालदार बन जाने के सबब वोह राहतों और आसाइशों के तसव्वुरात में गुम हो कर उस रात रब्बे अक्बर عَزَّوَجَلَّ से यक्सर ग़ाफ़िल हो गया। सुब्ह इसी धन की धुन में मगन मकान से निकला, इत्तिफ़ाक़न क़ब्रिस्तान के क़रीब से उस का गुज़र हुवा, क्या देखता है कि एक शख़्स ईंटें बनाने के लिये एक **क़ब्र** पर मिट्टी गूंध रहा है, येह मन्ज़र देख कर यक्दम उस की आंखों से **ग़फ़्लत** का पर्दा हट गया और इस तसव्वुर से उस की आंखों से आंसू जारी हो गए कि शायद मरने के बा'द मेरी क़ब्र की मिट्टी से भी लोग ईंटें बनाएंगे, आह ! मेरे आलीशान मकानात और उम्दा मल्बूसात वग़ैरा धरे के धरे रह जाएंगे लिहाज़ा **सोने की ईंट** से दिल लगाना तो ज़िन्दगी को सरासर **ग़फ़्लत** में गंवाना है, हां अगर दिल लगाना ही है तो मुझे अपने प्यारे प्यारे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से लगाना चाहिये। चुनान्चे उस ने **सोने की ईंट** तर्क की और ज़ोह्दो क़नाअ़त इख़्तियार की।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ग़फ़्लत के अस्बाब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई दुन्या की कसरत की सूरत में मिलने वाली ने'मत में सरासर **ग़फ़्लत** का अन्देशा है, जो दुन्यवी ने'मत से दिल लगाता है वोह **ग़फ़्लत** का शिकार हो कर रह जाता है, **ग़फ़्लत** फिर **ग़फ़्लत** है, ग़फ़्लत बन्दे को **रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ से दूर कर देती है।

अच्छी तिजारत भी ने'मत है, दौलत भी ने'मत है, आ़लीशान मकान भी ने'मत है, उ़म्दा सुवारी भी ने'मत है, मां बाप के लिये औलाद भी ने'मत है किसी भी दुन्यवी ने'मत में ज़रूरत से ज़ियादा मश्ग़ूलिय्यत बाइ़से **ग़फ़्लत** है । चुनान्चे पारह 28 **सू-रतुल मुनाफ़िक़ून** की आयत 9 में इर्शाद होता है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُلْهِكُمْ اَمْوَالُكُمْ وَلَاۤ اَوْلَادُكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿۹﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो ! तुम्हारे माल न तुम्हारी औलाद कोई चीज़ तुम्हें **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के ज़िक्र से ग़ाफ़िल न करे और जो ऐसा करे तो वोही लोग नुक़्सान में हैं ।

इस आयते मुक़द्दसा से उन लोगों को दर्से इ़ब्रत ह़ासिल करना चाहिये कि जिन को नेकी की दा'वत पेश की जाती है और नमाज़ के लिये बुलाया जाता है तो कह दिया करते हैं : "जनाब ! हम तो अपने रिज़्क़ की फ़िक्र में लगे रहते हैं, रोज़ी कमाना और बाल बच्चों की ख़िदमत करना भी तो इ़बादत है हमें जब इस से फ़ुरसत मिलेगी तो आप के साथ मस्जिद में भी चलेंगे ।" यक़ीनन ऐसी बातें **ग़फ़्लत** ही करवाती है ।

मुर्दे की चीख़ो पुकार बेकार है

सिर्फ़ और सिर्फ़ दुन्या के धन की फ़िरावानी की धुन में मगन रहने वालों, ह़ुसूले माल की ख़ातिर दुन्या के मुख़्तलिफ़ ममालिक में भटक्ते फिरने वालों मगर मस्जिद की ह़ाज़िरी से

कतराने वालों, अपने मकानात के डेकोरेशन पर पानी की त़रह़ पैसा बहाने वालों मगर राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में ख़र्च करने से जी चुराने वालों, दौलत में इज़ाफ़े के लिये मुख़्तलिफ़ गुर अपनाने वालों मगर नेकियों में ब-र-कत के मुआ-मले में बे नियाज़ रहने वालों को ख़्वाबे ग़फ़्लत से बेदार हो कर झटपट तौबा कर लेनी चाहिये कहीं ऐसा न हो कि मौत अचानक आ कर रोशनियों से जग-मगाते कमरे में फ़ोम के आराम देह गद्दे से मुज़य्यन ख़ूब सूरत पलंग से उठा कर कीड़े मकोड़ों से उभरती हुई ख़ौफ़नाक अंधेरी क़ब्र में सुला दे और वोह चिल्लाते रह जाएं कि **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुझे दोबारा दुन्या में भेज दे ताकि वहां जा कर मैं तेरी इ़बादत करूं। मौला (عَزَّوَجَلَّ) ! दोबारा दुन्या में पहुंचा दे मैं वा'दा करता हूं अपना सारा माल तेरी राह में लुटा दूंगा...... पांचों नमाज़ें मस्जिद के अन्दर पहली सफ़ में तक्बीरे ऊला के साथ बा जमाअ़त अदा करूंगा, तहज्जुद भी कभी नहीं छोड़ूंगा बल्कि मस्जिद ही में पड़ा रहूंगा...... दाढ़ी तो दाढ़ी ज़ुल्फ़ें भी बढ़ा लूंगा...... सर पर हर वक़्त इ़मामा शरीफ़ का ताज सजाए रहूंगा...... **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुझे वापस भेज दे...... एक बार फिर मोहलत दे दे दुन्या से फ़ेशन का ख़ातिमा कर के हर त़रफ़ सुन्नतों का परचम लहरा दूंगा...... परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ! सिर्फ़ और सिर्फ़ एक बार मोहलत अ़त़ा फ़रमा दे ताकि मैं ख़ूब नेकियां कर लूं...... रात दिन गुनाहों में मश्ग़ूल रहने वाले ग़फ़्लत शिआ़रों की मौत के बा'द चीख़ो पुकार यक़ीनन ला ह़ासिल रहेगी। क़ुरआने पाक पहले ही से **मु-तनब्बेह** (या'नी ख़बरदार) कर चुका है चुनान्चे

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब्ह और दस मरतबा शाम दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी। (مجمع الزوائد)

पारह 28 **सू-रतुल मुनाफ़िक़ून** की आयत 10 और 11 में इर्शाद होता है :

وَ اَنْفِقُوْا مِنْ مَّا رَزَقْنٰكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ یَّاْتِیَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ فَیَقُوْلَ رَبِّ لَوْ لَاۤ اَخَّرْتَنِیْۤ اِلٰۤى اَجَلٍ قَرِیْبٍ ۙ فَاَصَّدَّقَ وَ اَكُنْ مِّنَ الصّٰلِحِیْنَ ﴿۱۰﴾ وَ لَنْ یُّؤَخِّرَ اللّٰهُ نَفْسًا اِذَا جَآءَ اَجَلُهَا ؕ وَ اللّٰهُ خَبِیْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۱﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और हमारे दिये में से कुछ हमारी राह में ख़र्च करो क़ब्ल इस के कि तुम में किसी को मौत आए फिर कहने लगे, ऐ मेरे रब ! तूने मुझे थोड़ी मुद्दत तक क्यूं मोहलत न दी कि मैं स-दक़ा देता और नेकों में होता, और हरगिज़ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) किसी जान को मोहलत न देगा जब उस का वा'दा आ जाए और **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) को तुम्हारे कामों की ख़बर है।

दिला ग़ाफ़िल न हो यक्दम येह दुन्या छोड़ जाना है — बग़ीचे छोड़ कर ख़ाली ज़मीं अन्दर समाना है

तेरा नाज़ुक बदन भाई जो लैटे सैज फूलों पर — येह होगा एक दिन बे जां इसे किरमों[1] ने खाना है

तू अपनी मौत को मत भूल कर सामान चलने का — ज़मीं की ख़ाक पर सोना है ईंटों का सिरहाना[2] है

न बैली[3] हो सके भाई न बेटा बाप ते माई[4] — तू क्यूं फिरता है सौदाई[5] अ़मल ने काम आना है

कहां है ज़ोरे नमरूदी ! कहां है तख़्ते फ़िरऔ़नी ! — गए सब छोड़ येह फ़ानी अगर नादान दाना है

अ़ज़ीज़ा ! याद कर जिस दिन कि इ़ज़्राईल आवेंगे — न जावे कोई तेरे संग अकेला तूने जाना है

जहां के शग़्ल[6] में शाग़िल[7] ख़ुदा के ज़िक्र से ग़ाफ़िल — करे दा'वा कि येह दुन्या मेरा दाइम[8] ठिकाना है

ग़ुलाम इक दम न कर ग़फ़्लत ह़याती[9] पे न हो ग़ुर्रा[10]
ख़ुदा की याद कर हर दम कि जिस ने काम आना है

---

1 : कीड़ों 2 : तक्या 3 : मददगार 4 : मां 5 : पागल 6 : काम 7 : मश्ग़ूल 8 : हमेशा 9 : ज़िन्दगी 10 : मग़रूर

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढा उस ने जफ़ा की। (عبدالرزاق)

अनोखी नदामत

"मुका-श-फ़तुल कुलूब" में है : हज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू अ़ली दक़्क़ाक़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الرَّزَّاق फ़रमाते हैं : एक बहुत बड़े **वलिय्युल्लाह** رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه सख़्त बीमार थे, मैं इयादत के लिये हाज़िर हुवा, इर्द गिर्द मो'तक़िदीन का हुजूम था, वोह बुज़ुर्ग رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه रो रहे थे। मैं ने अ़र्ज़ की : **ऐ शैख़ !** क्या दुन्या छूटने पर रो रहे हैं ? फ़रमाया : नहीं, बल्कि नमाज़ें क़ज़ा होने पर रो रहा हूं। मैं ने अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! आप की नमाज़ें क्यूंकर क़ज़ा हो गईं ? फ़रमाया : मैं ने जब भी सज्दा किया तो **ग़फ़्लत** के साथ और जब सज्दे से सर उठाया तो **ग़फ़्लत** के साथ और अब **ग़फ़्लत** ही में मौत से हम-आग़ोश हो रहा हूं, फिर एक आहे सर्द दिले पुरदर्द से खींच कर चार अ़-रबी अश्आ़र पढ़े जिन का तरजमा येह है : ﴾1﴿ मैं ने अपने ह़श्र, क़ियामत के दिन और क़ब्र में अपने रुख़्सार के पड़ा होने के बारे में ग़ौर किया ﴾2﴿ इतनी इ़ज़्ज़त व रिफ़्अ़त के बा'द मैं अकेला पड़ा होउंगा और अपने जुर्म की बिना पर रह्न (या'नी गिरवी) होउंगा और ख़ाक ही मेरा तक्या होगी ﴾3﴿ मैं ने अपने ह़िसाब की त़वालत और नामए आ'माल दिये जाने के वक़्त की रुस्वाई के बारे में भी सोचा ﴾4﴿ मगर ऐ मुझे पैदा करने वाले और मुझे पालने वाले ! मुझे तुझ से रह़मत की उम्मीद है, तू ही मेरी ख़त़ाओं को बख़्शने वाला है। **(مُكَاشَفَةُ الْقُلُوب ص٢٢)**

रोता हुवा दाख़िले जहन्नम होगा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस ह़िकायत में किस क़दर इ़ब्रत है। ज़रा इन **अल्लाह** वालों को देखिये जिन का हर लम्ह़ा यादे इलाही

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा। (کنزالعمال)

عَزَّوَجَلَّ में बसर होता है मगर फिर भी इन्किसारी का आ़लम येह है कि अपनी इबादात व रियाज़ात को किसी ख़ात़िर में नहीं लाते और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बे नियाज़ी और उस की **ख़ुफ़्या तदबीर** से डरते हुए गिर्या व ज़ारी करते हैं। उन ग़फ़्लत के मारों पर सद करोड़ अफ़्सोस कि नेकी के नून का नुक्ता तक जिन के पल्ले नहीं, इख़्लास का दूर दूर तक नामो निशान नहीं मगर ह़ाल येह है कि अपनी इबादतों के बुलन्द बांग दा'वे करते नहीं थकते ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दे गुनाहों से मह़फ़ूज़ होने के बा वुजूद ख़ौफ़े इलाही عَزَّوَجَلَّ से थर-थराते कप-कपाते और टपटप आंसू गिराते हैं, मगर ग़फ़्लत शिआ़र बन्दों का ह़ाल येह है कि बे धड़क मा'सियत का सिल्सिला चलाते, अपने गुनाहों का आ़म ए'लान सुनाते और फिर इस पर ज़ोर ज़ोर से क़ह्क़हे लगाते ज़रा नहीं लजाते, कान खोल कर सुनिये ! ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : "जो हंस हंस कर गुनाह करेगा वोह रोता हुवा जहन्नम में दाख़िल होगा।"

(مُکاشَفَۃُ الْقُلوب ص۲۷۵)

अगर ईमान बरबाद हो गया तो......

हंस हंस कर झूट बोलने वालों, हंस हंस कर वा'दा ख़िलाफ़ी करने वालों, हंस हंस कर मिलावट वाला माल बेचने वालों, हंस हंस कर फ़िल्में डिरामे देखने वालों और गाने बाजे सुनने वालों, हंस हंस कर मुसल्मानों को सताने और बिला इजाज़ते शर-ई उन की दिल आज़ारियां करने वालों के लिये **लम्ह़ए फ़िक्रिया** है, अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ नाराज़ हो गया और उस के प्यारे **मह़बूब** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم रूठ गए और **ग़फ़्लत** के सबब दीदा दिलेरी के साथ हंस हंस कर

गुनाहों का इरतिकाब करने के बाइ़स ईमान बरबाद हो गया और जहन्नम मुक़द्दर बन गया तो क्या बनेगा ! ज़रा दिल के कानों से ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने इ़ब्रत निशान सुनिये ! चुनान्चे पारह 10 **सू-रतुत्तौबह** की आयत 82 में इर्शाद होता है :

فَلْيَضْحَكُوا قَلِيلًا وَّلْيَبْكُوا كَثِيرًا

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तो उन्हें चाहिये कि थोड़ा हंसें और बहुत रोएं।

मौत के तीन क़ासिद

मन्क़ूल है : ह़ज़रते सय्यिदुना या'क़ूब عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और ह़ज़रते सय्यिदुना इ़ज़्राईल **म-लकुल मौत** عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में दोस्ती थी। एक बार जब ह़ज़रते सय्यिदुना **म-लकुल मौत** عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام आए तो ह़ज़रते सय्यिदुना या'क़ूब عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया कि आप मुलाक़ात के लिये तशरीफ़ लाए हैं या मेरी रूह़ क़ब्ज़ करने के लिये ? कहा : मुलाक़ात के लिये। फ़रमाया : मुझे वफ़ात देने से क़ब्ल मेरे पास अपने **क़ासिद** भेज देना। **म-लकुल मौत** عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने कहा : मैं आप की त़रफ़ **दो या तीन क़ासिद** भेज दूंगा। चुनान्चे जब रूह़ क़ब्ज़ करने के लिये **म-लकूल मौत** عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام आए तो आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने इर्शाद फ़रमाया : आप ने मेरी वफ़ात से क़ब्ल क़ासिद भेजने थे वोह क्या हुए ? ह़ज़रते सय्यिदुना **म-लकुल मौत** عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने कहा : **सियाह या'नी काले बालों के बा'द सफ़ेद बाल, जिस्मानी त़ाक़त के बा'द कमज़ोरी और सीधी कमर के**

बा'द कमर का झुकाव, ऐ या'कूब (عَلَیْہِ السَّلَام) ! मौत से पहले इन्सान की त़रफ़ मेरे क़ासिद ही तो हैं। (مُکاشَفۃُ الْقُلوب ص۲۱)

एक अ़-रबी शाइ़र के इन दो अश्आ़र में किस क़दर इ़ब्रत है :

مَضَی الدَّھْرُ وَالْاَیَّامُ وَالذَّنْبُ حَاصِلٌ وَجَاءَ رَسُوْلُ الْمَوْتِ وَالْقَلْبُ غَافِلٌ

نَعِیْمُکَ فِی الدُّنْیَا غُرُوْرٌ وَّحَسْرَۃٌ وَعَیْشُکَ فِی الدُّنْیَا مُحَالٌ وَّبَاطِلٌ

तर-ज-मए अश्आ़र : ﴾1﴿ वक़्त और दिन गुज़र गए मगर गुनाह बाक़ी हैं, मौत का फ़िरिश्ता आ पहुंचा और दिल ग़ाफ़िल हैं ﴾2﴿ तुझे दुन्या में मिलने वाली ने'मतें धोका और तेरे लिये बाइ़से ह़सरत हैं, और दुन्या में दाइमी या'नी हमेशा बाक़ी रहने वाली राह़तें पाने का तसव्वुर तेरी ख़ाम ख़याली (या'नी ग़लत़ फ़हमी) है। (ایضاً ص۲۲)

बीमारी भी मौत का क़ासिद है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा कि मौत के आने से पहले **म-लकुल मौत** عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام अपने क़ासिद भेजते हैं। बयान कर्दा तीन क़ासिदीन के इ़लावा भी अह़ादीसे मुबा-रका में मज़ीद क़ासिदीन का तज़्किरा मिलता है। चुनान्चे **मरज़, कानों और आंखों का तग़य्युर** (या'नी पहले नज़र अच्छी होना फिर कमज़ोर पड़ जाना और सुनने की त़ाक़त की दुरुस्ती के बा'द बहरा पन की आमद) **भी मौत के क़ासिद हैं।** हम में से बहुत से लोग ऐसे होंगे जिन के पास **म-लकुल मौत** عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के क़ासिद तशरीफ़ ला चुके होंगे मगर क्या कहिये इस **ग़फ़्लत** का ! अगर सियाह बालों के बा'द सफ़ेद बाल होने लगते हैं ह़ालां कि येह **मौत का क़ासिद** है मगर बन्दा अपने दिल को

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर सो रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है। (طبرانی)

ढारस देने के लिये कहता है कि येह तो नज़्ले से बाल सफ़ेद हो गए हैं ! इसी त़रह़ बीमारी जो कि मौत का नुमायां क़ासिद है मगर इस में भी सरासर **ग़फ़्लत** बरती जाती है ह़ालां कि ''बीमारी'' ही के सबब रोज़ाना बे शुमार अफ़राद मौत का शिकार होते हैं ! मरीज़ को तो बहुत ज़ियादा मौत याद आनी चाहिये कि क्या मा'लूम जो **बीमारी** मा'मूली लग रही है वोही मोहलिक सूरत इख़्तियार कर के आन की आन में फ़ना के घाट उतार दे फिर अपने रोएं धोएं, दुश्मन ख़ुशियां मनाएं और मरने वाला मौत से **ग़ाफ़िल मरीज़** मनों मिट्टी तले अंधेरी क़ब्र में जा पड़े आह ! अब मरने वाला होगा और उस के अच्छे बुरे आ'माल।

जहन्नम के दरवाज़े पर नाम

ऐ आज के जनाबो और कल के मर्ह़ूमो ! याद रखिये ! जो गुनाहों पर अड़ा रहा वो रास्ता भूल गया, ग़फ़्लतों और बे अ़-मलियों की तारीकियों में भटक गया और ख़ुदा व मुस्त़फ़ा عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم की नाराज़ियों की सूरत में क़ब्रो आख़िरत के अ़ज़ाबों में फंस कर रह गया, अब पछताने और सर पछाड़ने से कुछ हाथ नहीं आएगा, अब भी मौक़अ़ है जल्द तर अपने गुनाहों से सच्ची तौबा कर के नमाज़ों, **र-मज़ानुल मुबारक** के रोज़ों और सुन्नतों भरी ज़िन्दगी गुज़ारने का अ़ह्द कर लीजिये। **सुनिये ! सुनिये !** सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : जो कोई एक नमाज़ भी क़स्दन तर्क कर देगा, उस का नाम जहन्नम के उस दरवाज़े पर लिख दिया जाएगा जिस से वोह जहन्नम में दाख़िल होगा। (حِلْيَةُ الْاَولياء ج۷ ص ۲۹۹ حديث ۱۰۵۹۰) इसी त़रह़ एक और ह़दीसे पाक में इर्शादे इब्रत

बुन्याद है : जो माहे र-मज़ान का एक रोज़ा भी बिला उ़ज़्रे शर-ई व मरज़ क़ज़ा कर देता है तो ज़माने भर के रोज़े उस की क़ज़ा नहीं हो सकते अगर्चे बा'द में रख भी ले। (ترمذی ج۲ ص۱۷۵ حدیث۷۲۳)

आंखों में आग

औ़रतों को ताड़ने वालों, अम्रदों के साथ बद निगाही करने वालों, फ़िल्में डिरामे देखने वालों, गाने बाजे और ग़ीबतें सुनने वालों को चाहिये कि झट तौबा करें वरना यक़ीनन अ़ज़ाब सहा न जाएगा, मन्क़ूल है : जो कोई अपनी आंखों को नज़्रे ह़राम से पुर करेगा क़ियामत के रोज़ उस की आंखों में आग भर दी जाएगी। (مُکاشَفۃُ الْقُلوب ص۱۰)

आग की सलाई

ह़ज़रते अ़ल्लामा **अबुल फ़रज अ़ब्दुर्रह़मान** बिन जौज़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی नक़्ल करते हैं : औ़रत के मह़ासिन (या'नी हुस्नो जमाल) को देखना इब्लीस के ज़हर में बुझे हुए तीरों में से एक तीर है, जिस ने ना महरम से आंख की ह़िफ़ाज़त न की उस की आंख में बरोज़े क़ियामत **आग की सलाई** फेरी जाएगी। (بَحرُ الدُّمُوع ص۱۷۱)

आंखों और कानों में कील

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़ाफ़िज़ अबुल क़ासिम सुलैमान **त़-बरानी** قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی नक़्ल करते हैं : मेरे मीठे मीठे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक मन्ज़र येह भी देखा कि कुछ लोगों की आंखों और कानों में कील ठुके हुए हैं। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में अ़र्ज़ की गई : येह वोह लोग हैं जो वोह देखते हैं जो इन्हें नहीं देखना चाहिये और वोह सुनते हैं जो इन्हें नहीं सुनना चाहिये। (اَلْمُعْجَمُ الْکَبِیر لِلطَّبَرانی ج۸ ص۱۵۶ حدیث۷۶۶۶) या'नी ह़राम देखने और सुनने

वालों की आंखों और कानों में कील ठुके हुए हैं । ख़बरदार ! शैतान के धोके में आ कर टीवी पर ख़बरें भी न देखा करें कि ख़बरों का बे पर्दा औ़रतों से पाक होना दुश्वार होता है । याद रखिये ! मर्द औ़रत को देखे या औ़रत मर्द को ब शह्वत देखे येह दोनों काम ह़राम हैं और हर फ़े'ले ह़राम जहन्नम में ले जाने वाला काम है । (وَالْعِيَاذُ بِاللهِ تَعَالٰى)

आंखों में पिघला हुवा सीसा

मन्क़ूल है : **"जो शख़्स शह्वत से किसी अज्नबिय्या के हुस्नो जमाल को देखेगा क़ियामत के दिन उस की आंखों में सीसा पिघला कर डाला जाएगा ।"** (ھدایہ ج۲ ص۳٦۸) यक़ीनन **भाभी** भी **अज्नबिय्या** ही है । जो **देवर व जेठ** अपनी **भाभी** को क़स्दन देखते रहे हों, बे तकल्लुफ़ बने रहे हों, मज़ाक़ मस्ख़री करते रहे हों, वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अ़ज़ाब से डर कर फ़ौरन से पेश्तर **सच्ची तौबा** कर लें । **भाभी** अगर **देवर** को छोटा भाई और **जेठ** को बड़ा भाई कह दे इस से बे पर्दगी और बे तकल्लुफ़ी जाइज़ नहीं हो जाती और **देवर** व भाभी बद निगाही, आपसी बे तकल्लुफ़ी व हंसी मज़ाक़ वग़ैरा गुनाहों की दलदल में मज़ीद धंसते चले जाते हैं । याद रखिये ! जेठ और देवर व भाभी का आपस में बिला ज़रूरत व बे तकल्लुफ़ी से गुफ़्त-गू करना भी मुसल्सल ख़त़रे की घन्टी बजाता रहता है ! भलाई इसी में है कि न एक दूसरे को देखें और न ही आपस में बिला ज़रूरत और बे तकल्लुफ़ी से बातचीत करें ।

देखना है तो मदीना देखिये
क़स्रे शाही का नज़ारा कुछ नहीं

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे। (کنزالعمال)

देवर व जेठ और भाभी वग़ैरा ख़बरदार रहें कि ह़दीस शरीफ़ में इर्शाद हुवा, "اَلْعَيْنَانِ تَزْنِيَان" या'नी आंखें ज़िना करती हैं। (مُسند اِمام احمد ج۳ ص ۳۰۵ حدیث ۸۸۵۲) बहर ह़ाल अगर एक घर में रहते हुए औ़रत के लिये क़रीबी ना महरम रिश्तेदारों से पर्दा दुश्वार हो तो चेहरा खोलने की तो इजाज़त है मगर कपड़े हरगिज़ ऐसे बारीक न हों जिन से बदन या सर के बाल वग़ैरा चमकें या ऐसे चुस्त न हों कि बदन के आ'ज़ा, जिस्म की **हैअत** (या'नी सूरत व गोलाई) और सीने का उभार वग़ैरा ज़ाहिर हो।

आतश परस्तों जैसी सूरत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दाढ़ी मुंडाना या एक मुठ्ठी से घटाना दोनों काम ह़राम हैं। सय्यिदुना इमाम मुस्लिम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه नक़्ल करते हैं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : **"मूंछें ख़ूब पस्त करो और दाढ़ियों को मुआ़फ़ी दो (या'नी बढ़ने दो) और मजूसियों (या'नी आतश परस्तों) जैसी सूरत मत बनाओ।"** (مُسلِم ص۱۵٤ حدیث ۲٦۰) इस फ़रमाने वाला शान में मुसल्मान की ग़ैरत को ललकार है, कैसी अ़जीबो ग़रीब बात है कि दा'वा **मह़ब्बते** मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का करे और शक्लो सूरत दुश्मनाने मुस्त़फ़ा जैसी बनाए।

सरकार का आ़शिक़ भी क्या दाढ़ी मुंडाता है ?
क्यूं इ़श्क़ का चेहरे से इज़्हार नहीं होता ?

कौन किस से पर्दा करे ?

पर्दे में रह कर सुनने वाली इस्लामी बहनो ! तुम भी सुनो ! बे पर्दगी ह़राम है, ग़ैर मर्दों को ब शह्वत देखना ह़राम है और फ़े'ले ह़राम जहन्नम में ले जाने वाला काम है। चचाज़ाद, तायाज़ाद, फूफीज़ाद, ख़ालाज़ाद, मामूंज़ाद, चची, ताई, मुमानी इन सब का पर्दा है, भाभी और

देवर व जेठ का पर्दा है, साली और बहनोई का पर्दा है ह़त्ता कि ना मह़रम पीर और मुरी-दनी का भी पर्दा है, मुरी-दनी अपने पीर साहि़ब का हाथ नहीं चूम सकती, सर के बालों पर मुर्शिद से हाथ नहीं फिरवा सकती, लड़की जब नव बरस की हो उस को पर्दा शुरूअ़ करवाइये और लड़का जब बारह बरस का हो जाए उसे औ़रतों से बचाइये।

ना जाइज़ फ़ेशन करने वालों का अन्जाम

सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : (मे'राज की रात) मैं ने कुछ मर्दों को देखा जिन की खालें **आग की क़ैंचियों** से काटी जा रही थी, मैं ने कहा : येह कौन हैं ? जिब्रईले अमीन (عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) ने बताया : येह लोग ना जाइज़ अश्या से ज़ीनत ह़ासिल करते थे। और मैं ने एक बदबूदार गढ़ा देखा जिस में शोरो ग़ोग़ा बरपा था, मैं ने कहा : येह कौन हैं ? तो बताया : येह वोह औ़रतें हैं जो ना जाइज़ अश्या से ज़ीनत ह़ासिल करती थीं। (تاریخ بغداد ج۱ ص۴۱۰) याद रखिये ! नेल पॉलिश की तह नाख़ुनों पर जम जाती है लिहाज़ा ऐसी ह़ालत में वुज़ू करने से न वुज़ू होता है न ही नहाने से ग़ुस्ल उतरता है, जब वुज़ू व ग़ुस्ल न हो तो नमाज़ भी नहीं होती, इस्लामी बहनों की ख़िदमत में मेरा म-दनी मश्वरा है कि **म-दनी बुरक़अ़** ओढ़ा करें, नीज़ ऐसे दस्तानों और जुराबों का एहतिमाम फ़रमाएं जिन में से हाथ पाउं की रंगत न झलक्ती हो, ग़ैर मर्दों के आगे अपनी हथेलियां और पाउं के पन्जे भी हरगिज़ ज़ाहिर न किया करें।

क़ज़ा उ़म्री कर लीजिये

अगर ख़ुदा न ख़्वास्ता नमाज़ रोज़े रह गए हैं तो उन का ह़िसाब लगा कर **क़ज़ा उ़म्री** फ़रमा लीजिये, और ताख़ीर की तौबा भी कर लीजिये, नमाज़ की क़ज़ा उ़म्री का आसान त़रीक़ा मा'लूम करने के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ किताब, "नमाज़ के अह़काम" हदिय्यतन

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है। (جامع صغیر)

हा़सिल कर लीजिये। इस में वुज़ू, ग़ुस्ल, नमाज़ और क़ज़ा उ़म्री वग़ैरा के वोह **अहम** तरीन अह़काम बयान किये गए हैं कि पढ़ कर शायद आप बोल उठें, अफ़्सोस ! अब तक वुज़ू व ग़ुस्ल और नमाज़ की दुरुस्त अदाएगी से मह़रूमी ही रही है !

اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

अब तमाम इस्लामी भाई दिल के पक्के अ़ज़्म के साथ हाथ लहरा लहरा कर اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ के फ़लक शिगाफ़ ना'रों के ज़रीए अपने म-दनी जज़्बात का इज़्हार कीजिये। निय्यत कीजिये, अब मेरी कोई नमाज़ क़ज़ा नहीं होगी। (اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ) **र-मज़ानुल मुबारक** को कोई रोज़ा क़ज़ा नहीं होगा। (اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ) फ़िल्में डिरामे नहीं देखूंगा। (اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ) गाने बाजे नहीं सुनूंगा। (اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ) दाढ़ी नहीं मुंडवाऊंगा। (اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ) एक मुठ्ठी से नहीं घटाऊंगा। (اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ)

दा'वते इस्लामी की म-दनी बहार

आप सब **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये, आ़शिक़ाने रसूल के **म-दनी क़ाफ़िलों** में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** के ज़रीए **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ दोनों जहानों में बेड़ा पार होगा। आइये ! आप की तरग़ीब व तह़रीस के लिये एक म-दनी बहार सुनते हैं : اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप का दिल भी जज़्बाते **तअस्सुर** से सीने के अन्दर झूम उठेगा और اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ सीना बाग़े मदीना बन जाएगा।

मुह़म्मद एह़सान अ़त्तारी का लाशा

बाबुल मदीना कराची के अ़लाक़े **गुल बहार** के एक मोडर्न नौ जवान बनाम मुह़म्मद एह़सान दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता

हुए और सगे मदीना عُفِیَ عَنْہُ के ज़रीए सरकारे बग़दाद हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْہُ के मुरीद बन गए। सरकारे ग़ौसे आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْہُ के मुरीद तो क्या हुए उन की ज़िन्दगी में म-दनी इन्क़िलाब बरपा हो गया। उन का रुख़ **एक मुठ्ठी दाढ़ी** के ज़रीए म-दनी चेहरा बन गया और सर मुस्तक़िल तौर पर सब्ज़ सब्ज़ इमामे के ताज से सर सब्ज़ो शादाब हो गया। उन्हों ने दा'वते इस्लामी के **मद्र-सतुल मदीना** (बालिग़ान) में क़ुरआने पाक नाज़िरा ख़त्म कर लिया और लोगों के पास ख़ुद जा जा कर **नेकी की दा'वत** की धूमें मचाने और **इन्फ़िरादी कोशिश** फ़रमाने लगे। एक दिन अचानक उन्हें गले में दर्द महसूस हुवा, इलाज भी करवाया मगर "दर्द बढ़ता गया जूं जूं दवा की" के मिस्दाक़ गले के मरज़ ने बहुत ज़ियादा शिद्दत इख़्तियार कर ली यहां तक कि क़रीबुल मौत हो गए, इसी हालत में उन्हों ने सगे मदीना عُفِیَ عَنْہُ का **म-दनी वसिय्यत नामा** जो कि **मक-त-बतुल मदीना** से हदिय्यतन मिलता है उसे सामने रख कर अपना "वसिय्यत नामा" तय्यार करवा कर दा'वते इस्लामी के अ़लाक़ाई ज़िम्मेदार के हवाले कर दिया और फिर सदा के लिये आंखें मूंद लीं। ब वक़्ते वफ़ात उन की उम्र तक़रीबन 35 साल होगी, उन्हें "गुल बहार" के क़ब्रिस्तान में सिपुर्दे ख़ाक कर दिया गया, हस्बे वसिय्यत उन की **क़ब्र** के पास कमो बेश बारह घन्टे तक इस्लामी भाइयों ने "इज्तिमाए ज़िक्रो ना'त" जारी रखा। वफ़ात के तक़रीबन साढ़े तीन साल बा'द बरोज़ मंगल, 6 **जुमादल आख़िरह** 1418 हि. (7-10-97) का वाक़िआ है कि एक और इस्लामी भाई मुहम्मद उ़स्मान अ़त्तारी का जनाज़ा उसी क़ब्रिस्तान में लाया गया, कुछ इस्लामी भाई मर्हूम मुहम्मद एहसान अ़त्तारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللهِ الْبَارِی की **क़ब्र** पर फ़ातिहा के लिये आए तो **येह मन्ज़र देख कर उन की आंखें फटी की फटी रह गईं कि क़ब्र की एक जानिब बहुत बड़ा शिगाफ़ हो गया है और तक़रीबन साढ़े**

तीन साल क़ब्ल वफ़ात पाने वाले मर्हूम मुह़म्मद एह़सान अ़त्तारी सर पर सब्ज़ सब्ज़ इमामा शरीफ़ का ताज सजाए ख़ुश्बूदार कफ़न ओढ़े मज़े से लैटे हुए हैं। आनन फ़ानन येह ख़बर हर त़रफ़ फैल गई और रात गए तक लोग मुह़म्मद एह़सान अ़त्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى के कफ़न में लिपटे हुए तरो ताज़ा लाशे की ज़ियारत करते रहे। तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के बारे में ग़लत़ फ़हमियों का शिकार रहने वाले बा'ज़ अफ़राद भी **दा'वते इस्लामी** वालों पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस अ़ज़ीम फ़ज़्लो करम का खुली आंखों से मुशा-हदा कर के तह़सीन व आफ़रीन पुकार उठे और दा'वते इस्लामी के मुह़िब बन गए।

जो अपनी ज़िन्दगी में सुन्नतें उन की सजाते हैं

ख़ुदा व मुस्त़फ़ा अपना उन्हें प्यारा बनाते हैं

शहीदे दा'वते इस्लामी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह कोई नया वाक़िआ़ नहीं शायद आप को याद होगा कि 25 **र-जबुल मुरज्जब** 1416 सि.हि. को मर्कज़ुल औलिया **लाहोर** में सुन्नतों के अदना ख़ादिम सगे मदीना عُفِىَ عَنْهُ की जान लेने की कोशिश के नतीजे में **दा'वते इस्लामी के दो मुबल्लिग़ीन ह़ाजी उ़हुद रज़ा अ़त्तारी और मुह़म्मद सज्जाद अ़त्तारी** رَحِمَهُمَا اللهُ الْبَارِى शहीद हुए थे। तक़रीबन आठ माह के बा'द मर्कज़ुल औलिया में होने वाली शदीद बारिशों के नतीजे में **शहीदे दा'वते इस्लामी ह़ाजी उ़हुद रज़ा अ़त्तारी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى की क़ब्र मुन्हदिम हो गई थी, जब मजबूरन क़ब्र कुशाई की गई तो उन की लाश बिल्कुल तरो ताज़ा बरआमद हुई और कई लोगों की ह़ाज़िरी में शहीदे दा'वते इस्लामी को दूसरी **क़ब्र** में मुन्तक़िल किया गया था। आख़िर में मेरी तमाम इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों से म-दनी इल्तिजा है कि दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे **म-दनी माह़ोल** से हर दम वाबस्ता रहिये। **दा'वते**

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रह़मतें भेजता है। (مسلم)

इस्लामी में कोई मेम्बर शिप नहीं है, आप अपने यहां होने वाले "दा'वते इस्लामी" के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में पाबन्दी से शिर्कत और सुन्नतों की तरबिय्यत के **म-दनी क़ाफ़िलों** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सफ़र फ़रमाया करें, सभी को चाहिये कि अपने अपने शो'बे में ख़ूब सुन्नतों के म-दनी फूल लुटाएं और नेकी की दा'वत की धूमें मचाएं।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुए **सुन्नत** की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं। ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे **नुबुव्वत**, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए़ बज़्मे हिदायत, नोशए बज़्मे जन्नत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी **सुन्नत** से **मह़ब्बत** की उस ने मुझ से **मह़ब्बत** की और जिस ने मुझ से **मह़ब्बत** की वोह **जन्नत** में मेरे साथ होगा। (ابنِ عساکر ج۹ ص۳٤۳)

सीना तेरी सुन्नत का मदीना बने आक़ा
जन्नत में पड़ोसी मुझे तुम अपना बनाना

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

"बच्चे का अ़क़ीक़ा करना सुन्नते मुबा-रका है" के पच्चीस हुरूफ़ की निस्बत से अ़क़ीक़े के 25 म-दनी फूल

❖ **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : "लड़का अपने अ़क़ीक़े में **गिरवी** है सातवें दिन उस की त़रफ़ से जानवर ज़ब्ह़ किया जाए और उस का नाम रखा जाए और सर मूंडा जाए।" (ترمذی ج۳ ص۱۷۷ حدیث۱۵۲۷) गिरवी होने का मत़लब येह है कि उस से पूरा नफ़्अ़ ह़ासिल न होगा जब तक **अ़क़ीक़ा** न किया जाए और बा'ज़ (मुह़द्दिसीन) ने कहा बच्चे की सलामती और उस की नश्वो नुमा (फलना फूलना) और उस में अच्छे औसाफ़ (या'नी उ़म्दा ख़ूबियां) होना अ़क़ीक़े के साथ वाबस्ता हैं (बहारे शरीअ़त, जि. 3, स. 354)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ وَاٰلہٖ وَسَلَّم : जो शख़्स मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया। (طبرانی)

❁ बच्चा पैदा होने के शुक्रिया में जो जानवर ज़ब्ह़ किया जाता है उस को **अ़क़ीक़ा** कहते हैं (ऐज़न, स. 355) ❁ जब बच्चा पैदा हो तो मुस्तह़ब येह है कि उस के कान में अज़ान व इक़ामत कही जाए। अज़ान कहने से اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ बलाएं दूर हो जाएंगी ❁ बेहतर येह है कि दहने (या'नी सीधे) कान में चार मर्तबा अज़ान और बाएं (या'नी उलटे) में तीन मर्तबा इक़ामत कही जाए ❁ बहुत लोगों में येह रवाज है कि लड़का पैदा होता है तो अज़ान कही जाती है और लड़की पैदा होती है तो नहीं कहते। येह न चाहिये बल्कि लड़की पैदा हो जब भी अज़ान व इक़ामत कही जाए ❁ सातवें दिन उस का नाम रखा जाए और उस का सर मूंडा जाए और सर मूंडने के वक़्त **अ़क़ीक़ा** किया जाए। और बालों को वज़्न कर के उतनी चांदी या सोना स-दक़ा किया जाए (ऐज़न, स. 355) ❁ लड़के के **अ़क़ीक़े** में दो बकरे और लड़की में एक बकरी ज़ब्ह़ की जाए या'नी लड़के में नर जानवर और लड़की में मादा मुनासिब है। और लड़के के **अ़क़ीक़े** में बकरियां और लड़की में बकरा किया जब भी ह़रज नहीं (ऐज़न, स. 357) ❁ (बेटे के लिये दो की) इस्तित़ाअ़त (या'नी त़ाक़त) न हो तो एक भी काफ़ी है (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 20, स. 586) ❁ क़ुरबानी के ऊंट वग़ैरा में अ़क़ीक़े की शिर्कत हो सकती है ❁ अ़क़ीक़ा फ़र्ज़ या वाजिब नहीं है सिर्फ़ सुन्नते मुस्तह़ब्बा है, (अगर गुन्जाइश हो तो ज़रूर करना चाहिये, न करे तो गुनाह नहीं अलबत्ता अ़क़ीक़े के सवाब से मह़रूमी है) ग़रीब आदमी को हरगिज़ जाइज़ नहीं कि सूदी क़र्ज़ा ले कर अ़क़ीक़ा करे (इस्लामी ज़िन्दगी, स. 27) ❁ बच्चा अगर सातवें दिन से पहले ही मर गया तो उस का **अ़क़ीक़ा** न करने से कोई असर उस की शफ़ाअ़त वग़ैरा पर नहीं कि वोह वक़्ते **अ़क़ीक़ा** आने से पहले ही गुज़र गया। हां जिस बच्चे ने अ़क़ीक़े का वक़्त पाया या'नी सात दिन का हो गया और बिला उ़ज़्र बा वस्फ़े इस्तित़ाअ़त (या'नी त़ाक़त होने के बा वुजूद)

उस का **अ़क़ीक़ा** न किया उस के लिये येह आया है कि वोह अपने मां बाप की शफ़ाअ़त न करने पाएगा (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 20, स. 596) ❁ अ़क़ीक़ा विलादत के सातवें रोज़ **सुन्नत** है और येही अफ़्ज़ल है, वरना **चौदहवें**, वरना **इक्कीसवें** दिन । (ऐज़न, स. 586) और ❁ अगर **सातवें** दिन न कर सकें तो जब चाहें कर सकते हैं, **सुन्नत** अदा हो जाएगी (बहारे शरीअ़त, जि. 3, स. 356) ❁ जिस का **अ़क़ीक़ा** न हुवा हो वोह जवानी, बुढ़ापे में भी अपना **अ़क़ीक़ा** कर सकता है (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 20, स. 588) जैसा कि **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ए'लाने **नुबुव्वत** के बा'द ख़ुद अपना **अ़क़ीक़ा** किया (مُصَنَّف عبد الرزاق ج ٤ ص٢٥٤ حديث ٢١٧٤) ❁ बा'ज़ (उ़-लमाए किराम) ने येह कहा कि **सातवें** या **चौदहवीं** या **इक्कीसवें** दिन या'नी सात दिन का लिह़ाज़ रखा जाए येह बेहतर है और याद न रहे तो येह करे कि जिस दिन बच्चा पैदा हो उस दिन को याद रखें उस से एक दिन पहले वाला दिन जब आए तो वोह **सातवां** होगा, म-सलन जुमुआ़ को पैदा हुवा तो (ज़िन्दगी की हर) जुमा'रात (उस का) **सातवां** दिन है । (बहारे शरीअ़त, जि. 3, स. 356) अगर विलादत का दिन याद न हो तो जब चाहें कर लीजिये ❁ बच्चे का सर मूंडने के बा'द सर पर ज़ा'फ़रान पीस कर लगा देना बेहतर है (ऐज़न, 357) ❁ बेहतर येह है कि अ़क़ीक़े के जानवर की हड्डी न तोड़ी जाए बल्कि हड्डियों पर से गोश्त उतार लिया जाए येह बच्चे की सलामती की नेक फ़ाल है और हड्डी तोड़ कर गोश्त बनाया जाए इस में भी ह़रज नहीं । गोश्त को जिस त़रह़ चाहें पका सकते हैं मगर मीठा पकाया जाए तो बच्चे के अख़्लाक़ अच्छे होने की फ़ाल है । (ऐज़न) **मीठा गोश्त बनाने के दो त़रीक़े :** ﴾1﴿ एक किलो गोश्त, आधा किलो मीठा दही, सात दाने छोटी इलाएची, 50 ग्राम बादाम, ह़स्बे ज़रूरत घी या तेल सब मिला कर पका लीजिये, पकने के बा'द ज़रूरत के मुत़ाबिक़ चाश्नी डालिये ।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रह़मतें भेजता है । (مسلم)

ज़ीनत (या'नी ख़ूब सूरती) के लिये गाजर के बारीक रेशे बना कर नीज़ किशमिश वग़ैरा भी डाले जा सकते हैं ❁2❁ एक किलो गोश्त में आधा किलो चुक़न्दर डाल कर ह़स्बे मा'मूल पका लीजिये ❁ अ़वाम में येह बहुत मश्हूर है कि अ़क़ीक़े का गोश्त बच्चे के मां बाप और दादा दादी, नाना नानी न खाएं येह मह़ज़ ग़लत़ है इस का कोई सुबूत नहीं (ऐज़न) ❁ इस की खाल का वोही हुक्म है जो क़ुरबानी की खाल का है कि अपने सर्फ़ में लाए या मसाकीन को दे या किसी और नेक काम मस्जिद या मद्रसे में सर्फ़ करे (ऐज़न) ❁ अ़क़ीक़े का जानवर उन्हीं शराइत़ के साथ होना चाहिये जैसा क़ुरबानी के लिये होता है। उस का गोश्त फ़ु-क़रा और अ़ज़ीज़ो क़रीब दोस्त व अह़बाब को कच्चा तक़्सीम कर दिया जाए या पका कर दिया जाए या उन को बत़ौरे ज़ियाफ़्त व दा'वत खिलाया जाए येह सब सूरतें जाइज़ हैं (बहारे शरीअ़त, जि. 3, स. 357) ❁ (अ़क़ीक़े का गोश्त) चील, कव्वों को खिलाना कोई मा'ना नहीं रखता, येह (या'नी चील, कव्वे) फ़ासिक़ हैं (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 20, स. 590) ❁ **अ़क़ीक़ा** शुक्रे विलादत है लिहाज़ा मरने के बा'द अ़क़ीक़ा नहीं हो सकता ❁ लड़के के अ़क़ीक़े में कि बाप ज़ब्ह़ करे दुआ़ यूं पढ़े :

اَللّٰھُمَّ ھٰذِہٖ عَقِیْقَةُ ابْنِیْ فُلَانٍ دَمُھَا بِدَمِہٖ وَلَحْمُھَا بِلَحْمِہٖ وَعَظْمُھَا بِعَظْمِہٖ وَجِلْدُھَا بِجِلْدِہٖ وَشَعْرُھَا بِشَعْرِہٖ اَللّٰھُمَّ اجْعَلْھَا فِدَاءً لِابْنِیْ مِنَ النَّارِ ط بِسْمِ اللهِ اَللهُ اَکْبَرُ۔

फ़ुलां की जगह बेटे का जो नाम रखता हो ले बेटी हो तो दोनों जगह **اِبْنِیْ** की **بِنْتِیْ** और पांचों जगह **'ہٖ'** की जगह **"ھَا"** कहे और दूसरा शख़्स ज़ब्ह़ करे तो दोनों जगह **اِبْنِیْ فُلَان** या **بِنْتِی فُلَان** की जगह **فُلَانُ اِبْنِ فُلَان** या

---

1 : तरजमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! येह मेरे फ़ुलां बेटे का अ़क़ीक़ा है इस का ख़ून उस के ख़ून, इस का गोश्त उस के गोश्त इस की हड्डी उस की हड्डी, इस का चमड़ा उस के चमड़े और इस के बाल उस के बाल के बदले में हैं, ऐ अल्लाह ! इस को मेरे बेटे के लिये जहन्नम की आग से फ़िदया बना दे । अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नाम से, अल्लाह सब से बड़ा है ।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो शख़्स मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया। (طبرانی)

فُلَانَه بِنْتِ فُلَانَه कहे। बच्चे की उस के बाप और लड़की की उस की मां की त़रफ़ निस्बत करे (मुलख़्ख़स अज़ फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 20, स. 585) ❖ अगर दुआ़ याद न हो तो बिग़ैर दुआ़ पढ़े दिल में येह ख़याल कर के कि फ़ुलां लड़के या फ़ुलानी लड़की का अ़क़ीक़ा है, بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ पढ़ कर ज़ब्ह़ कर दे **अ़क़ीक़ा** हो जाएगा, अ़क़ीक़े के लिये दुआ़ पढ़ना ज़रूरी नहीं (जन्नती ज़ेवर, स. 323) ❖ आज कल उ़मूमन अ़क़ीक़े के लिये दा'वत का एहतिमाम कर के अ़ज़ीज़ो अक़ारिब को बुलाया जाता है जो कि अच्छा अ़मल है और शिर्कत करने वाले बच्चे के लिये तोह़फ़े लाते हैं येह भी उ़म्दा काम है। अलबत्ता यहां कुछ तफ़्सील है : अगर मेहमान कुछ तोह़फ़ा न लाए तो बा'ज़ अवक़ात मेज़बान या उस के घर वाले मेहमान की बुराई करने के गुनाहों में पड़ते हैं, तो जहां यक़ीनी त़ौर पर या ज़न्ने ग़ालिब से ऐसी सूरते ह़ाल हो वहां मेहमान को चाहिये कि बिग़ैर मजबूरी के न जाए, ज़रूरतन जाए और तोह़फ़ा ले जाए तो ह़रज नहीं, अलबत्ता मेज़बान ने इस निय्यत से लिया कि अगर मेहमान तोह़फ़ा न लाता तो येह या'नी मेज़बान इस (मेहमान) की बुराइयां करता या बत़ौरे ख़ास निय्यत तो नहीं मगर इस (मेज़बान) का ऐसा बुरा मा'मूल है तो जहां इसे (या'नी मेज़बान को) ग़ालिब गुमान हो कि लाने वाला इसी त़ौर पर या'नी (मेज़बान के) शर से बचने के लिये लाया है तो अब लेने वाला मेज़बान गुनहगार और अ़ज़ाबे नार का ह़क़दार है और येह तोह़फ़ा इस के ह़क़ में **रिश्वत** है। हां अगर बुराई बयान करने की निय्यत न हो और न इस का ऐसा बुरा मा'मूल हो तो तोह़फ़ा क़बूल करने में ह़रज नहीं।

हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ दो कुतुब (1) **312** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**बहारे शरीअ़त**" हिस्सा **16** और (2) **120** सफ़ह़ात की किताब "**सुन्नतें और आदाब**" हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये। सुन्नतों की तरबिय्यत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह़क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया । (ابن سنی)

का एक बेहतरीन ज़रीआ़ **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी क़ाफ़िलों** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है ।

लूटने रह़मतें क़ाफ़िले में चलो सीखने सुन्नतें क़ाफ़िले में चलो
होंगी ह़ल मुश्किलें क़ाफ़िले में चलो ख़त्म हों शामतें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

फ़ेहरिस

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	1	आंखों और कानों में कील	11
सोने की ईंट	1	आंखों में पिघला हुवा सीसा	12
ग़फ़्लत के अस्बाब	2	आतश परस्तों जैसी सूरत	13
मुर्दे की चीख़ो पुकार बेकार है	3	कौन किस से पर्दा करे ?	14
अनोखी नदामत	6	ना जाइज़ फ़ेशन करने वालों का अन्जाम	14
रोता हुवा दाख़िले जहन्नम होगा	6	क़ज़ा उ़म्री कर लीजिये	15
अगर ईमान बरबाद हो गया तो......	7	اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ	16
मौत के तीन क़ासिद	8	दा'वते इस्लामी की म-दनी बहार	16
बीमारी भी मौत का क़ासिद है	9	मुह़म्मद एह़सान अ़त्तारी का लाशा	16
जहन्नम के दरवाज़े पर नाम	10	शहीदे दा'वते इस्लामी	18
आंखों में आग	11	अ़क़ीक़े के 25 म-दनी फूल	20
आग की सलाई	11	☆☆☆	

ماخذ و مراجع

کتاب	مطبوعہ	کتاب	مطبوعہ
ترمذی	دارالفکر بیروت	ابن عساکر	دارالفکر بیروت
مسند امام احمد	دارالفکر بیروت	ہدایہ	داراحیاء التراث العربی بیروت
مسلم	دارابن حزم بیروت	فتاوٰی رضویہ	رضا فاؤنڈیشن مرکز الاولیاء لاہور
مُصَنَّف عبدالرزاق	دارالکتب العلمیہ	بہارِ شریعت	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
معجم کبیر	داراحیاء التراث العربی بیروت	مکاشفۃ القلوب	دارالکتب العلمیہ
فردوس الاخبار	دارالکتاب العربی بیروت	بحر الدموع	مکتبۃ دارالفجر
حلیۃ الاولیاء	دارالکتب العلمیہ	اسلامی زندگی	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
تاریخ بغداد	دارالکتب العلمیہ	جنتی زیور	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के महके महके म-दनी माह़ोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात इशा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की म-दनी इल्तिजा है। आ़शिक़ाने रसूल के **म-दनी क़ाफ़िलों** में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और **ईमान की ह़िफ़ाज़त** के लिये कुढ़ने का ज़ेह्न बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेह्न बनाए कि **''मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ''** अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये **''म-दनी इन्आ़मात''** पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये **''म-दनी क़ाफ़िलों''** में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

मक-त-बतुल मदीना की शाखें

मुम्बई : 19, 20, मुहम्मद अली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429
देहली : 421, मटिया महल, उर्दू बाज़ार, जामेअ़ मस्जिद, देहली फ़ोन : 011-23284560
नागपूर : गरीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ी नगर रोड, मोमिन पुरा, नागपूर : (M) 09373110621
अजमेर शरीफ़ : 19/216 फ़्लाहे दारैन मस्जिद, नाला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, अजमेर फ़ोन : 0145-2629385
हैदरआबाद : पानी की टंकी, मुगल पुरा, हैदरआबाद फ़ोन : 040-24572786
हुब्ली : A.J. मुढोल कोम्पलेक्ष, A.J. मुढोल रोड, ओल्ड हुब्ली ब्रीज के पास, हुब्ली, कर्नाटक. फ़ोन : 08363244860

मक-त-बतुल मदीना®
दा'वते इस्लामी

फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापूर, अहमदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net